Research Scholar Name: Md Sajid Hussain
Supervisor Name : Dr. Neeraj kumar
Department: Hindi
Title: IKKISVIN SHATABDI MEN BADALTE JEEVANMOOLYA AUR SAMKALEEN HINDI UPANYAS.

Notification No.-COE/Ph.D/Notification/519/2022
Notification Date: 23.08.2022

शोध-सार

21वीं शताब्दी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्रांति का युग है। परिवर्तन की तीव्रता से अनुमान से भी अधिक है। यह परिवर्तन एवं उसके प्रभाव की गति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जिस प्रक्रिया को घटित होने में शताब्दी एवं सहस्त्राबदी लगती थी वह अब दशकों में सत्य साबित हो जा रही हैं। इन परिवर्तनो के परिणाम स्वरुप सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर आमूल-चूल परिवर्तन लक्षित किए जा सकते हैं। जिसके कारण मूल्य परिवर्तन की प्रक्रिया में भी तेजी आई है। यही वजह है कि मूल्यों का संक्रमण की काफी तेजी से बढ़ा है। हमारी परंपरागत मान्यताएं, आदर्श इत्यादि में परिवर्तन हो रहा है और नवीन जीवन मूल्यों का आविर्भाव हो रह है। विभिन्न स्तर पर व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। भूमंडलीकरण तथा औद्योगिक एवं तकनीकी विकास वह महत्वपूर्ण कारक है जिसने व्यापक स्तर पर परिवर्तनों को जन्म दिया है। स्थान, काल, परिस्थिति जनित परिवर्तनों को इस परिघटना ने असीम तीव्रता प्रदान की है। वैश्वीकरण जैसी 'ग्लोबल' प्रक्रिया का तेजी से प्रसार हुआ। जिसने पूरे विश्व को सीमा रहित बनाकर एक वैश्विक आर्थिक तंत्र की संकल्पना को सिद्ध किया। परिणामस्वरूप वैश्वीकरण ने बाजारों के लिए ही सीमाओं को मुक्त नहीं किया बल्कि बड़े पैमाने पर आवागमन की शुरुआत की जिसने वैश्विक स्तर आर्थिक सहित सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर भी व्यापक परिवर्तन किया। इन परिवर्तनो ने औद्द्योगिक एवम् तकनीकी विकास जनित परिवर्तनों ने मानवीय जीवन को सरल और सुलभ तो बनाया लेकिन साथ ही भौतिकता को बढ़ावा दिया। जिसने शहरीकरण उपभोक्तावादी संस्कृति, बाजारवाद, यांत्रिकता आदि को बढ़ावा दिया। परिणामस्वरूप सामाजिक स्तर पर मानवीय जीवन, सामाजिक संरचना एवं आचार-विचार को गहरे प्रभावित किया। पश्चिमीकरण और आधुनिकता के नाम पर एक व्यापक विमर्श का क्षितिज तैयार हुआ जिसने नए मान्यताओं, आदर्शों को गढ़ने में सहायता दी। विभिन्न स्तरों पर मूल्यों की नवीन व्याख्या देखने को मिलती है। इस दृष्टि से मानववाद का उद्भव और सामजिक व्याख्या के केंद्र में मनुष्य का स्थापित होना व्यापक मूल्यो की उत्पत्ति का कारण बना। परंपरागत धूरी का टूटना एवम् नए विमर्शों के केंद्र में मूल्यों को स्थापित करने में भूमिका निभाई। इन परिवर्तनों ने धर्म आधारित सामाजिक संरचनागत ढाँचे तथा धार्मिक आदर्श पर आधारित मर्यादा एवं मूल्य संबंधी धारणाओं में व्यापक परिवर्तन आया। जिससे वैयक्तिक एवं परिवारिक दोनों स्तर पर परिवर्तन को प्रेरित किया। संबंधों की जटिलताओं को और जटिल बनाया। प्रौद्योगिकीय विकास ने नवीन मूल्यों के आविर्भाव में योग दिया। संबंधों

और संरचनाओं को नए ढंग से व्याख्यायित किया। जीवन स्तर से लेकर सामुदायिक सौहाद्र तक को प्रभावित किया। इस परिवर्तन से आर्थिक परिवर्तनों को और गति मिली जिसने मिलकर शहरीकरण और यांत्रिकता जैसी भावशून्य परिवर्तन को जन्म दिया। जिसने सारहीन और संवेदनहीन मूल्यों को बढ़ावा दिया।

समकालीन उपन्यास साहित्य विभिन्न स्तरों पर होने वाले मूल्यगत बदलावों को अभिव्यक्त करता है। सामाजिक स्तर पर गहन विमर्शों की पड़ताल, पर्यावरण की चिंता, माननीय बराबरी, समतामूलक समाज की परिकल्पना, आपसी संबंधों की मधुरता, परिवारिक ढाँचागत व्यवस्था, वैयक्तिक और सामाजिक जीवन, बदलती आपसी प्रेम संबंध, विवाह प्रणाली आदि के साथ आर्थिक तंत्र और उसकी सारी पेचीदगी को दर्ज करता है। अपने विभिन्न रूपों में 21वीं सदी में विभिन्न स्तरों पर होने वाले परिवर्तनों और उसके प्रभावों को अपनी कथावस्तु में प्रमुखता से जगह देते हैं। सामाजिक स्तरों पर व्यक्ति और समाज के साथ के बनते बिगड़ते-संबंधों के साथ गढ़े जा रहे नए विमर्शों की स्वीकृति और अस्वीकृति के प्रश्न के साथ कई स्थापित परंपरिक मूल्यों के नकार का स्वर भी मजबूत हुआ है। इसी तरह आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक स्तर पर होने वाले परिवर्तनों और उसके परिणामस्वरूप मूल्यगत प्रभावों को भी समकालीन हिन्दी उपन्यास प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करता है।